टमाटर का उन्नत खेती

खेत व उसका तैयारी:- भूमि म 3-4 बार जुताई करने के पश्चात् पाटा चलाकर भूमि को भूरभूरा व समतल कर लेना चाहिए। पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से का जानी चाहिए। भूमि म जल निकास का उचित व्यवस्था होनी चाहिए तथा पी.एच. 6-7 के मध्य होना चाहिए।

उन्नत किस्म:-टमाटर को पौधा को वृध्दि का प्रकृति के अनुरूप दो भागा म बांटा गया है।

निधारित वृध्दि वाला किस्म :- एस एच 2, पुसा गौरव, पुसा अर्ला ड्वार्फ

अनिधारित वृध्दि वाला किस्म:- पूसा रुबी, सलेक्शन - 120, पंत बहार

इसके अतिरिक्त रबी के लिए किस्म - हिमसोना, अभिताब नं 3, हिमषखर खरीफ ऋतु के लिए करिष्मा, रश्मि, गीता कुबेर किस्म अधिक उपज प्रदान करती है।

बीज का मात्रा:-टमाटर का एक एकड़ जमीन के लिए 150-200 ग्राम बीज का आवष्कता होती है। एक हैक्टर जमीन के लिए 500-600 ग्राम बीज का आवष्कयता होती है।

बुवाई का समय व विधि:-मैदानी भागा म टमाटर का बुवाई वष म दो बार जुन जुलाई माह व नवम्बर दिसम्बर माह म का जाती है

पौधषाला का भूमि तैयार करके 3×1 मीटर आकार का क्यारीया तैयार करले क्यारीया जमीन का सतह से 10-15 सेमी उभरा हूई होनी चाहिए। बीज का बुवाई से पहले बीज को थाइरम या बाविस्टन या कैप्टान कवकनाषी 2 ग्राम/किलो बीज के हिसाब से उपचारित कर।

पौधा का खेत म रोपाई:-रोपाई से पूव 2.5 किलो ट्राइकोडमा को 50 किलो अच्छा सडी हुई गोबर का खाद के साथ मिला कर खेत म डालने से फ्युजेरियम विल्ट से बचाव किया जा सकता। पौधे से पौधे का दुरी 45-60 सेमी तथा कतार से कतार का दुरी 75-90 सेमी रखनी चाहिए। रोपाई हमेषा सांयकाल के समय हा करनी चाहिए इससे नुकसान कम होता है। एक स्थान पर एक हा पौधा लगाये तथा पौधा लगाने के तुरन्त बाद हल्का सिंचाई कर।

खरपतवार प्रबन्धन:-टमाटर का फसल म खरपतवार नियंत्रण के लिए निराई गुडाई का आवष्यकता होती है। प्रत्यक सिंचाई के बाद म हल्का निराई गुडाई करनी चाहिए। खरपतवार भूमी से पोषक तत्व लेकर टमाटर का उपज म कमी करते है तथा किट व बिमारियां को शरण देते है। रासायनिक खरपतवार नियन्त्रण के लिए पेन्डीमिथेलीन (स्टाम्प/दोस्त) 400 मिली प्रति एकड खरपतवारा के अंकुरण से पहले प्रयोग कर। पानी का यात्रा 200 लीटर प्रति एकड काम म होवे।

सहारा देना:-यह अन्तर शस्य क्रिया पौधा का रोपाई के 2-3 सप्ताह के बाद का जाती है। पौधे को सहारा देने से अधिक उत्पादन व फल फटने का समस्या म कमी आती है। सहारा देने के लिए कतार के समानान्तर बांस का खुती को गाडकर उसम दो या तीन तार खीच कर बांध देना चाहिए तथा पौधा को इन तारा से सुतली से बांध देना चाहिए।

खाद व उवरक:-खाद व उवरक का प्रयोग करने से पहले निकटतम प्रयोगषाला से मिट्टी का जांच करवा लेनी चाहिए। मिट्टी का जांच के अनुसार उवरका का प्रयोग करना चाहिए।बुवाई पुव 10 टन गोबर का खाद अच्छा सडी हुई कच्ची गोबर का खाद का प्रयोग ना करे। रासायनिक खाद का प्रयोग अनुषंसा के अनुसार एन पी के का मात्रा 80:40:40 किलो प्रति एकड प्रयोग करे।

सिंचाई:-टमाटर का फसल से अधिक उपज लेने के लिए सिंचाई का विषेष महत्व है। गर्मा म 5-7 दिन के अन्तराल पर तथा सर्दा म 10-15 दिना के अन्तराल पर सिंचाई कर।

वृध्दि नियन्त्रका का प्रयोग:-टमाटर का फसल म उपज बढाने के लिए प्लेनोफिक्स (NAA) का 4-5 मि.ली. प्रति टंका या 50 मि.ली प्रति एकड का छिडकाव करने से फुला का गिरना कम होता है तथा अधिक फल बनते है। इसके अलावा सुक्ष्म मात्रिक तत्व बोरॉन एवं जिंक का कमी के लक्षण प्रकट होने पर बोरेक्स 0.6 प्रतिषत का दर से खडी फसल म छिडकाव कर।

किट नियन्त्रण:-फूल छेदक के नियन्त्रण के लिए फेरोनोन ट्रैप का उपयोग कर तथा इडोक्सा काब (अवोट/फिगो) 5 एस सी 200 मि.ली. प्रति एकड का छिडकाव करना चाहिए। महु व सफेद मक्खी:- ये कीट पत्तिया का रस चूसते है तथा बायरस जनित रोगा का प्रसार करते है।किटो का रोकथाम के लिए इमिडा क्लोप्रीड17. 8 SL 40 एम.एल तथा थायो मेथोक्सान 25 WG 40 ग्राम प्रति एकड 150 लीटर पानी म मिलाकर छिडकाव करना चाहिए।

सुत्रकमी के नियन्त्रण के लिए गर्मिया म गहरा जुताई कर तथा कार्बफ्युरान 10 किलो प्रति एकड का प्रयोग करे।

रोग नियन्त्रण:-आद्र गलन:- बीजा को बुवाई से पूव काबडाजिम 2 ग्राम या ट्राइकोउमा बिरडी 2 ग्रामप्रति किलो बज के अनुसार उपचारित कर । पछेती अंगमारी:- मेन्कोजब 25 ग्राम या क्लोरोथेलोनिल 25 ग्राम प्रति 10 लीटर या क्लाइटोक्स 5 ग्राम प्रतिलीटर पानी का दर से छिडकाव करना चाहिए। जीवाणु उखटा:- फसल चक्र अपनाना चाहिए। 5 ग्राम थायोफनेट मियाइल + 3 ग्राम रोडोनिल + 6 ग्राम स्ट्रेप्टोसाक्लिन प्रति 15 लीटर पानी के साथ मिलाकर छिडकाव कर।

पैकिंग व भण्डारण:-टमाटर के भंडारण के लिए 12-15 डिग्री तापमान पर भंडारित किया जाता है।ळरे फलो को 10-15 डिग्री तापमान पर 30 दिनो के लिए भण्डारित कर सकते है भण्डारण के समय आपेक्षित आद्रता 85-90 प्रतिषत होनी चाहिए।